मेरा जीवन ही मेरा संदेश है: महात्मा गाँधी

महात्मा गांधी भारत ही नहीं पूरी दुनिया के लिए आज भी उतने ही ख़ास हैं जितने वह जीते जी थे, आज़ादी एवं शांति की स्थापना ही उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य था। गांधीवाद एक विचारधारा है, एक दर्शन है, एक आईना हैं जो शाश्वत है, एक ऐसी जीवन शैली है जो सदैव प्रासंगिक है एवं कभी मिटती नहीं है। 21वीं सदी में भी गांधीवाद वो करिश्माई दर्शन एवं विचार धारा है जिसके जरिए आज भी विश्व में शांति, सद्भाव एवं सौहार्द को ढूंढ़ने की कोशिश की जाती है तो गाँधी किस तरह से गाँधी बने आज इस पर बात करते हैं।
गांधी जी ने हमें सिखाया कि बहादुरी जान लेने में नहीं, देने में है। आप जीते किस तरह हैं यही नहीं आप मरते किस तरह हैं यह भी आपके व्यक्तित्व, आपके वजूद का निर्धारण करता है। गांधी जी के साथ यह भी बहुत बड़ी दिक्कत है कि हम सब उन्हें इतना अधिक जानते हैं कि उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं और जानना चाहते भी नहीं हैं क्योंकि हमने उन्हें इतिहास का विषय बना दिया है, हमने हमारे वर्तमान से उनका कोई नाता नही बनाया है।
अकसर लोग प्रतिकूल परिस्थितियों में एक जुमले का प्रयोग करते है कि 'मजबूरी का नाम महात्मा गांधी' महात्मा गांधी अगर मजबूर होते तो आज देश शायद आजाद न होता, अगर गांधी जी मजबूरी का प्रतीक होते तो वह नमक कानून को तोड़ने के लिए सरकार के आदेश को तोड़ने का दुस्साहस ना करते, अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध तन कर खड़ा होने वाला यह निर्णायक क्षण ही गांधी को गांधी बनाता है। उन्हें गाँधी बनाती है उनकी खुद के साथ प्रयोग करने की आदत फिर चाहे वह द. अफ्रीका में सत्याग्रह आंदोलन कर उसे भारत में भी इस्तेमाल करना हो या अपने निजी जीवन में ब्रह्मचर्य का प्रयोग कर अपने अनुयायियों को उस राह पर चलने के लिए प्रेरित करना हो। गांधी जी ने जीवन में मूलभूत जरूरतों को पूरा करने और बेहद कम आजीविका पर भी जीवित रहने के लिए खुद के ही भोजन पर प्रयोग किया था यह देखने के लिए कि कितने कम खर्च में वे जीवित और स्वस्थ रह सकते हैं, उन्होंने अपनी खुराक को लेकर भी प्रयोग किया और वह सामान्य रूप से फल, बकरी के दूध और जैतून के तेल पर जीवन निर्वाह करने लगे, इसे कहते हैं मज़बूत इच्छा शक्ति एवं अडिग इरादों वाला व्यक्तित्व।

वर्तमान सरकार ने बड़े योजनापूर्वक तरीक़े से गाँधी जी के हाथ में झाड़ू पकड़ा कर, अपनी हर एक काल्पनिक स्मार्ट सिटी में किसी न किसी सड़क किनारे उन्हें खड़ा कर दिया कि खुद को उनका समर्थक दिखा कर स्वच्छता अभियान के नाम से टीआरपी ले लेंगे पर असली सच वह अपशब्द हैं जो वह रात-दिन अपने नेता-मंत्रियों से उस महान आत्मा के लिये कहलवाते हैं और गोडसे को महान बताते हैं। कितने खोखले नेता हैं ये! राजनीति में आने के लिए गाँधी की बुराई और राजनीति में बने रहने के लिए गाँधी के भाषण करते हैं पर मन में सवाल आता है कि क्या गाँधी बनना वाक़यी इतना मुश्किल है?

अहिंसा जब मूल्य बनकर हमारे पास आती है तब वह हममें एक बुनियादी परिवर्तन कर देती है। हथियार की जगह विचार ले लेते हैं और एक समय ऐसा आता है कि आप खुद ही हथियार बन जाते हैं। हमारा चलना, बोलना, कहना ही वह कसौटी बन जाता है जहां से बड़े-बड़े आंदोलन जन्म भी लेते हैं और परवान भी चढ़ते हैं। गांधी अहिंसावादी थे और अन्याय के विरोध में अपनी आवाज उठाते थे पर सच यह है कि ये दोनों गुण उनमें शुरू से नहीं थे। अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज उठाने का अस्त्र उन्हें कस्तूरबा गांधी से मिला, गाँधी जी का विवाह बचपन में ही हो गया था तब वो पत्नी को नियंत्रण में रखना चाहते थे लेकिन कस्तूरबा खुले विचारों की महिला थीं हर सवाल का जवाब नहीं देती थीं, हां कई बार तार्किक बहस जरूर कर बैठती थीं, अन्याय का दृढ़ता से विरोध करने की उनकी प्रेरणा कस्तूरबा ही थीं लेकिन अपनी पत्नी से भी सीख लेना

बहुत विशाल हृदय का कार्य है छोटे व्यक्ति इस काम को नही कर पाएँगे या तो हम सीखने पर ध्यान दे सकते हैं या फिर सिखाने वाले के अस्तित्व पर।
जब 1942 में मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो मंच पर गांधी जी अकेले नहीं थे पूरी कांग्रेस के साथ बैठे थे और कांग्रेस के उन्हीं दिग्गज नेताओं ने गांधी जी के भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव के समर्थन में बड़े-बड़े व्याख्यान दिए और अगली सुबह गाँधी जी के साथ वह सभी जेलों में बंद कर दिए गए, जब आप कुछ नया करने चलते हैं तो उसकी क़ीमत आपको चुकानी पड़ती है और यह क़ीमत उस वक्त ज़्यादा बढ़ जाती है जब लड़ाई व्यक्तिगत नही सामाजिक हो, यह आजादी के आंदोलन की सबसे लंबी जेल थी पर उसके परिणामस्वरूप भारतीयों को अपनी आज़ादी के लिए एकजुट होकर आवाज़ उठाने की प्रेरणा मिली।

'स्वराज्य' में चयन की स्वतंत्रता होती है, 'राष्ट्रवाद' में आपका चयन होता है। 'राष्ट्रवाद' के लिए धर्म एक हथियार है कि जिसके बल पर अपने से अलग, अपने से असहमत और अपने विरोधी की गर्दन काटी जा सकती है अगर धर्म इस काम नहीं आता हो तो इन सारे धर्मावलंबियों को धर्म छोड़ने या बदलने में एक पल भी नही लगेगा। गांधी जी का धर्म उन्हें सिखाता है कि हर आदमी के भीतर छिपी संभावनाओं को उजागर करना ही सबसे बड़ा धर्म है। गाँधी जी के अंदर अहिंसा का गुण प्रारंभ से नहीं था, इस तरह के आलौकिक गुण मनुष्य स्वयं खुद के भीतर ढूँढ सकता है बस प्रयत्न की आवश्यकता होती है, कहते हैं जब गाँधी जी बैरिस्टर की पढ़ाई करने विदेश गए थे तभी एक दिन तांगे में बैठने की जगह को लेकर एक अंग्रेज ने उनसे हाथापाई की तो उन्होंने हाथ नहीं उठाया बल्कि चुप रहकर विरोध प्रदर्शित किया। यहीं से नौजवान गांधी जी को मूक विरोध करने या कहें अहिंसा के साथ प्रदर्शन करने की सीख मिली। उनके उपवास सीखने का भी बड़ा रोचक प्रसंग है विदेश में पढ़ाई के दौरान वो बीमार पड़े तो चिकित्सक ने गोमांस का सूप पीने की सलाह दी। बीमारी और कड़ाके की ठंड के बावजूद उन्होंने सिर्फ दलिया खाया तब उन्हें भरोसा हुआ कि भूख पर काबू रखा जा सकता है और यहीं से गांधी जी को उपवास रखने की प्रेरणा मिली।

गांधी जी का सार्वजानिक जीवन दक्षिण अफ्रीका में प्रारंभ हुआ लेकिन भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा उन्हें वहीं से मिली थी। उन्होंने देखा की भारतीयों के साथ वहाँ बुरा व्यवहार किया जा रहा है तो उन्होंने भारतीयों की सहायता की उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन प्रारंभ किया, अनेक कष्ट सहे, अपमान सहा पर अंत में उन्हें सफलता मिली। उसके बाद गांधी जी वापस भारत आये और स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया वह कई बार जेल गए अब सारा देश उनके साथ था, लोग उन्हें राष्ट्रपिता कहने लगे थे और अंत में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। लेकिन आजकल बड़े शोर-शराबे के साथ जिसे 'राष्ट्रवाद' कह कर हमें पिलाया जा रहा है दरअसल वह राष्ट्र को टुकड़े-२ करके अपनी मुट्ठी में करने की कुछ शातिर लोगों की कुटिल चाल है, अपनी सांप्रदायिकता को छिपाने का फूहड़ प्रपंच है। आधुनिक इतिहास में जातीय श्रेष्ठता के सिद्धांत में विश्वास करने वाली एक विचारधारा है जो हिटलर, सावरकर से चलती हुई संघ परिवार तक पहुंचती है जिसमें यहां-वहां से कई छोटे-बड़े गुरु जी वगैरह शामिल हो जाते हैं। इस 'राष्ट्रवाद' में मंत्र कहीं से आता है और तंत्र में आपको ईंधन की तरह इस्तेमाल किया जाता है। इस 'राष्ट्रवाद' का दूसरा नाम ही 'मॉब लिंचिंग' है। अब सवाल यह है कि क्या कोई राष्ट्र हिंदुत्व के नाम पर भीड़ के हवाले किया जा सकता है? तो इन स्वार्थी और उन्मादी लोगों से अपने देश को मुक्त कराना भी सबसे बड़ी देशभक्ति है। गाँधी जी के दिखाये रास्ते पर ही शांति एवं उन्नति सम्भव है हिंसा कभी भी समाधान नही हो सकती है, अपनी भावी पीढ़ी में, अपने बच्चों में हम गाँधी को जीवित रखें तो ही उनका अस्तित्व सुखद होगा वरना अगर नयी सीख हमारे बच्चों ने अपने दिमाग़ में बिठा ली तो अपनी नज़रों के सामने हम अपना सब कुछ ख़त्म होते हुए देखेंगे। अपने बच्चों को खुद में गाँधी ढूँढना हमें ज़रूर सिखाना है।

जब किसी ने गाँधी जी से पूछा कि आप दुनिया के लिए क्या संदेश देना चाहते हैं तो उन्होंने बस एक छोटा-सा वाक्य कह दिया, “मेरा जीवन ही मेरा संदेश है!” बस यही हमें सीखना है जिस तरह वह जिये उसे देखो और उससे तुम्हारे जीवन जीने में अगर मदद मिलती है तो उनका मरना भी तुम्हारे लिए सार्थक था। कहने का मतलब यह है कि हमारा जीवन ही नहीं हमारा मरना भी हमारे समाज के लिए एक संदेश होना चाहिये। आज नैतिकता की बजाए अवसरवाद पर आधारित भ्रष्ट राजनीति के दौर के राजनेता महात्मा गांधी के आदर्शों पर चलने का साहस नहीं कर सकते।
गाँधी जी की याद लोगों को सिर्फ 2 अक्टूबर और 30 जनवरी को ही आती हैं, आज गांधी जी समाज में सिर्फ “अतिथि” बनकर रह गए हैं जयंती और पुण्यतिथि पर गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर समाज उस गांधी से बचना चाहता है जिसे अमल में लाकर शायद उनका जीवन एक आदर्श जीवन बन जाए।

सचिन चौधरी
सांसद प्रत्याशी अमरोहा लोकसभा
कांग्रेस प्रदेश महासचिव